

भारतीवसन्तगीतिः

एक काव्य यात्रा



कवि: पण्डित जानकीवल्लभ शास्त्री



सरस्वती वंदना: कविता का सार

यह कविता देवी सरस्वती से एक प्रार्थना है, जिसमें कवि वसंत ऋतु के सौंदर्य के बीच उनसे अपनी वीणा बजाने का आग्रह करते हैं ताकि प्रकृति और प्राणियों में एक नई चेतना का संचार हो। इस काव्य यात्रा में हम श्लोक-दर-श्लोक इस सौंदर्य और संगीत के संगम का अनुभव करेंगे।



श्लोक १: संगीत का आह्वान

निनादय नवीनामये वाणि! वीणाम्
मृदुं गाय गीतिं ललित-नीति-लीनाम्॥

भावार्थ

हे सरस्वती! अपनी नई वीणा को बजाओ। सुंदर
नीतियों से परिपूर्ण, मधुर गीत का गायन करो।

ज्ञान-बिन्दु

- कवि: कां सम्बोधयति? → वाणीम्
- कीदृशीं वीणां निनादयितुं प्रार्थयति? → नवीनाम्
- गीति कथं गातुं कथयति? → मृदुम्
- इस श्लोक में क्रियापद (verb) क्या है? → 'निनादय'

श्लोक २: वसंत का दृश्य

मधुर-मञ्जरी-पिञ्जरी-भूत-मालाः
वसन्ते लसन्तीह सरसा रसालाः
कलापाः ललित-कोकिला-काकलीनाम्॥

भावार्थ

इस वसंत में, मीठे आम के फूलों (मंजरी) से पीली हो चुकी सरस आम के पेड़ों की पंक्तियाँ सुशोभित हो रही हैं, और उन पर बैठी कोयलों के समूह सुंदर लग रहे हैं।

शब्द-सौंदर्य

- यहाँ 'रसालाः' का अर्थ 'आम्रम्' (आम के पेड़) है।
- 'सरसाः' शब्द 'रसालाः' का विशेषण (adjective) है, जिसका अर्थ है 'रस से भरे हुए'।



श्लोक 3: मंद समीर और यमुना तट

वहति मन्दमन्दं सनीरे समीरे
कलिन्दात्मजायास्सव्वानीरतीरे,
नतां पङ्क्तिमालोक्य मधुमाधवीनाम्॥

भावार्थ

यमुना (कलिन्दात्मजा) के बेंत की लताओं से घिरे तट पर, जल-
कणों से युक्त हवा के मंद-मंद बहने पर, मधुमाधवी लताओं की
झुकी हुई पंक्तियों को देखकर (हे सरस्वती! अपनी वीणा बजाओ)।

स्थान-चित्रण

- कवि भगवती भारती को किस नदी के तट पर वीणा बजाने को कहते हैं? → कलिन्दात्मजाया: (यमुनाया:) तीरे।
- श्लोक में 'दृष्ट्वा' (देखकर) के लिए प्रयुक्त शब्द → 'आलोक्य'।



श्लोक 8: प्रकृति का गुंजन

ललित-पल्लवे पादपे पुष्पपुञ्जे,
मलयमारुतोच्युम्बिते मञ्जुकुञ्जे,
स्वनन्तीन्ततिम्प्रेक्ष्य मलिनामलीनाम्॥

भावार्थ

मलय पर्वत की सुगंधित वायु से स्पर्श किए गए सुंदर पत्तों वाले वृक्षों, फूलों के गुच्छों और सुंदर कुंजों पर गुंजन करते काले भौरों की पंक्ति को देखकर (हे सरस्वती! अपनी वीणा बजाओ)।

शब्द-सौंदर्य

- अलीनाम् → भ्रमराणाम् (भौरों का)
- पादपे → वृक्षे (पेड़ पर)
- समीरः → पवनः (हवा)



श्लोक ५: संगीत का जादुई प्रभाव

लतानां नितान्तं सुमं शान्तिशीलम्
चलेदुच्छलेत्कान्तसलिलं सलीलम्,
तवाकर्ण्य वीणामदीनां नदीनाम्॥

भावार्थ

तुम्हारी ओजस्वी (अदीनाम्) वीणा को सुनकर, लताओं के शांत पड़े फूल झूम उठें और नदियों का सुंदर जल क्रीड़ा करता हुआ उछल पड़े।

परिणाम

- वीणा को सुनकर क्या होता है?
→ शांत फूल (सुम्) झूम उठते हैं (चलेत्) और नदियों का जल (सलिलम्) उछल पड़ता है (उच्छलेत्)।
- 'उच्छलेत्' क्रियापद का कर्तृपद (subject) क्या है?
→ 'कान्तसलिलम्'।



भाषा-अभ्यास

शब्द, व्याकरण और वाक्य-रचना में निपुणता



अपने शब्दकोश को समृद्ध करें: पर्याय शब्द

'क' स्तम्भः	'ख' स्तम्भः
सरस्वती	वाणी
आम्रम्	रसालः
पवनः	समीरः
तटे	तीरे
भ्रमराणाम्	अलीनाम्
सुमम्	पुष्पम्



विपरीतार्थक शब्दों को समझें: विलोम शब्द

पदानि		विलोमपदानि	
कठोराम्			मृदुम्
कटु			मधुर
शीघ्रम्			मन्दमन्दम्
प्राचीनम्			नवीनम्
नीरसः			सरसः

ज्ञान परीक्षाणः एकपदेन उत्तरं लिखत

प्रश्नः कविः कां सम्बोधयति?

उत्तरम्: वाणीम्

प्रश्नः कविः वाणी का वादयितुं प्रार्थयति?

उत्तरम्: वीणाम्

प्रश्नः कीदृशीं वीणां निनादायितुं प्रार्थयति?

उत्तरम्: नवीनाम्

प्रश्नः गीति कथं गातुं कथयति?

उत्तरम्: मृदुम्

प्रश्नः सरसाः रसालाः कदा लसन्ति?

उत्तरम्: वसन्ते



विषय की गहरी समझ: पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत

प्रश्न: कविः वाणी किं कथयति?

उत्तरम्: कविः वाणी वीणां निनादयितुं कथयति।

प्रश्न: वसन्ते किं भवति?

उत्तरम्: वसन्ते मधुरमञ्जरीपिञ्जरी भूतमालाः सरसाः रसालाः लसन्ति एवं ललित कोकिला काकलीनां कलापाः शोभन्ते।

प्रश्न: सलिलं तव वीणाम् आकर्ण्य कथम् उच्चलेत?

उत्तरम्: सलिलं तव वीणाम् आकर्ण्य सलीलम् उच्चलेत्।



संस्कृत में स्वयं को अभिव्यक्त करें: वाक्य-रचना

- ❁ निनादयः हे वाणि! त्वं स्ववीणां निनादय।
- ❁ मन्दमन्दम्: तत्र मन्दमन्दम् पवनः वहति।
- ❁ मारुतः पर्वतेषु अहर्निशम् मारुतः प्रवहति।
- ❁ सलिलम्: जलस्य पर्यायः सलिलम् अपि भवति।
- ❁ सुमनः सुमनः धरायाः शृङ्गारः भवति।



अभ्यासः अब आप इन शब्दों का प्रयोग करके
अपने वाक्य बनाने का प्रयास करें।



भाषा की बारीकियां: विशेषण और क्रिया

वाक्यांश: नवीनाम् वीणाम्

विश्लेषण: यहाँ 'नवीनाम्' विशेषण (adjective) है और 'वीणाम्' विशेष्य है।



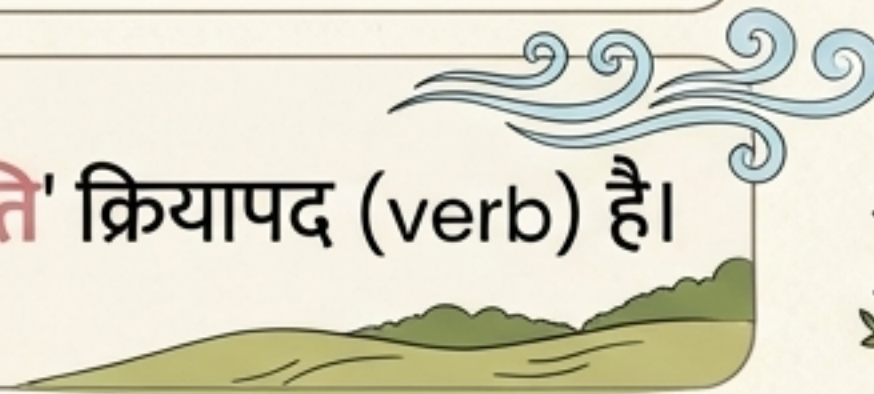
वाक्यांश: सरसा: रसाला:

विश्लेषण: यहाँ 'सरसा:' विशेषण है और 'रसाला:' विशेष्य/कर्तृपद (subject) है।



वाक्यांश: वहति मन्दमन्दं समीरे

विश्लेषण: यहाँ 'वहति' क्रियापद (verb) है।



वाक्यांश: लसन्ति सरसा रसाला:

विश्लेषण: यहाँ 'लसन्ति' क्रियापद है और इसका कर्तृपद 'रसाला:' है।



आपकी रचनात्मक बारी: निष्कर्ष एवं परियोजना

सारांश

यह कविता हमें सिखाती है कि संगीत में प्रकृति को भी जीवंत करने की शक्ति होती है। कला और प्रकृति का यह संगम जीवन में नई प्रेरणा और चेतना का संचार करता है।

परियोजनाकार्यम्

इस पाठ में वीणा की चर्चा है। अन्य पाँच वाद्ययंत्रों के चित्र बनाएँ या एकत्र करें और उनके नाम संस्कृत में लिखें।



संगीत और प्रकृति का यह सुंदर संगम आपको सदैव प्रेरित करता रहे।